पहल पहली ही सीढ़ी से...

स्वयं न तो इस जगत में दूसरे की आंखों से देखा जा सकता है और न दूसरे के चरणों से चला जा सकता है। यहां तो मरना भी स्वयं ही पड़ता है स्वयं के लिए, और जीना भी। यहां दूसरा आपकी जगह नहीं ले सकता। इसलिए सबसे पहले कुछ बातें समझ लेनी ज़रूरी है अपने संबंध में। क्योंकि वहां अगर भ्रांति है, तो ठीक रास्ता भी गलत जगह पहुंचाएगा। अगर आपकी अपने संबंध में ठीक समझ नहीं है, तो आप ठीक रास्ते को भी गलत मंजिल तक ले जाने वाला बना लोगे। और अगर आपको समझ है अपने संबंध में, तो ऐसा कोई भी रास्ता नहीं है, जो आपको ठीक जगह न पहुंचा दे। रास्ते भी ठीक मंजिल पर तब पहुंचाते हैं जब आदमी उस पर चलने वाला हो।

रास्ता नहीं पहुंचाता, चलने वाला ही पहुंचता है। रास्ता बदल जाता है आपके साथ। आप जैसे हो, वैसा ही रास्ता हो जाता है। इसलिए कोई बंधे-बंधाए रास्ते नहीं हैं, जिन पर आप अंधे की तरह चल सको। पहली बात अपने संबंध में ठीक समझ लें क्योंकि आपसे ही निकलेगा रास्ता और अंत में आपसे ही पैदा होगी मंजिल। आप ही सब कुछ हो। बीज भी आप हो, वृक्ष भी आप ही बनोगे। यह ठीक से समझ लो कि आपको कुछ भी पता नहीं। सूरज की एक किरण भी आपको मिल जाए, तो सूरज तक पहुंचने का मार्ग खुल गया। क्योंकि उसी किरण को पकड़ कर आप सूरज के मूल स्रोत तक पहुंच जाओगे। और सागर की एक बूंद भी आप चख लो, तो आपने सारा सागर चख लिया।

- ब्र. कु. गंगाधर

अगर आपको थोड़ा भी पता हो जीवन का, तो फिर किसी से पूछने की ज़रूरत नहीं है। वह जो थोड़ा सा पता है, उसके सहारे चलो। तो जैसे कोई आदमी एक छोटा सा दीया लेकर अंधेरे में चले, तो दो ही कदम पर प्रकाश पड़ता है; लेकिन जब वह दो कदम चल लेता है, तो दो कदम और आगे प्रकाश पड़ता है। दो कदम प्रकाश पड़ता हो जिस दीये से, उससे भी हज़ारों मील की यात्रा की जा सकती है। कोई हज़ारों मील के रास्ते को प्रकाशित करने की ज़रूरत नहीं है। हाथ में दीया हो छोटा, तो भी बड़े से बड़े अंधकारपूर्ण रास्ते को पार किया जा सकता है। दो कदम भी काफी है। अगर आपको थोड़ा भी पता हो अपने संबंध में तो किसी के पास जाने की ज़रूरत नहीं है। तो पहली बात तो यह ठीक से समझ लेना कि आपको अपने संबंध में कुछ भी पता नहीं है अभी। और आप जो भी जानते हो, वे सब शब्द हैं। शब्दों में न तो कोई प्राण होते हैं, न कोई अर्थ होता है। शब्द से ज्यादा असत्य इस जगत में और कुछ भी नहीं है। अनुभव-अनुभव में अर्थ है। मैं कितना ही कहूँ, जो मैं जानता हूँ, उसे मैं शब्दों में न डाल पाऊंगा। कभी भी कोई नहीं डाल पाया है। और कभी कोई डाल भी नहीं पाएगा। क्योंकि जो मैं जानता हूँ, वह मेरा अनुभव है। और जब मैं उसे शब्द बनाता हूँ, तो मेरे कानों में जो सुनाई पड़ता है, वह अनुभव नहीं है, वह कोरा शब्द है। मैं कहता हूँ-परमात्मा। आप सुन लेते हो। और मैं कहता हूँ-आत्मा। और वह भी सुन लिया जाता है। लेकिन न तो आत्मा से कुछ प्रकट होता है और न परमात्मा से। शब्दों की समझदारी नासमझी का दूसरा नाम है।

आपको कुछ भी पता नहीं, यह बात ख्याल में ले लें। यह आधारभूत हैं। क्योंकि जो व्यक्ति यह समझ ले बिना जाने कि मैं जानता हूँ, उसके जानने का द्वार बंद हो जाता है। बीमार समझ ले कि स्वस्थ है, तो चिकित्सा की तलाश बंद हो जाती है। इस बात का ख्याल आ जाए कि मुझे कुछ भी पता नहीं, तो यह ज्ञान की पहली किरण है। अब आप ईमानदार हुए। अब आपने कम से कम एक सच्ची बात स्वीकार की, कि मुझे कुछ पता नहीं। आपने अपने शास्त्र हटा कर रख दिए और अपने शब्दों को छोड़ दिया। और आप ईमानदार हुए, प्रामाणिक हुए अपने प्रति कि न मुझे आत्मा का पता है, न मुझे मोक्ष का। मुझे पता ही नहीं कि जीवन क्या है? यह अज्ञान की स्वीकृति-ज्ञान का पहला चरण है। जब आपको स्वयं के बारे में जानना हो तो बाह्य से प्राप्त ज्ञान को भूलना होगा। कहीं बाह्य ज्ञान आपकी बाधा न बन जाए। फिर ज्ञान हो ही गया तो व्यर्थ श्रम उठाने की ज़रूरत नहीं है। इसलिए इसे ठीक से समझ लेना, कि आप बीमार हो तो ही दवा की जा सकेगी। अगर आप अंधेरे में हों तो कोशिश होगी प्रकाश की ओर चलने की। जो आदमी सोया हो उसे जगाना बहुत आसान है। जो आदमी जाग कर पड़ा हो और सोचता हो कि सोया है-उसे जगाना बहुत मुश्किल है।

दूसरी बात, सबका जीवन एक ही बात को खोज रहा है-कैसे दु:ख मिटे? कैसे आनंद उपलब्ध हो? एक ही तलाश है और एक ही प्यास है। वह वृक्ष भी उठ रहा है जमीन से आकाश की तरफ, तो इसी तलाश में है। अगर पक्षी उड़ रहे हैं और पशु चल रहे हैं और आदमी जी रहा है-तलाश वही है। एक पत्थर भी अगर अस्तित्व में है, तो उसकी भी भीतरी खोज आनंद की है। तो दूसरी बात ख्याल में ले लेना कि खोज क्या रहे हो? बहुत लोग परमात्मा को खोजने निकल पड़ते हैं, लेकिन परमात्मा की खोज मुश्किल है। मुश्किल शेष पेज 4 पर

जीवन में बंधनमुक्त होना ही पुरुषार्थ

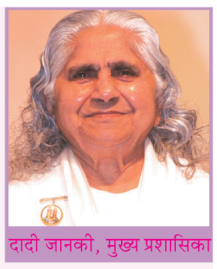
दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

स्वयं को बाबा का हूँ, यह मानने से अन्दर ही अन्दर अभिमान से फ्री हो जायेंगे। समय प्रति समय बाबा इशारे में कहता ही रहता है कि रूहानी एक्सरसाइज़ करते रहो। दिन में दो बारी करो, तीन बारी करो। इस एक्सरसाइज़ को करने से अन्दर की वीकनेस चली जाती है, तो मजबूत बनते जाते हैं। जो बाबा ज्ञान का भोजन देता है उसे हज़म करने से रूहानियत बढ़ती है। उस खाने को खाने से खून बढ़ता है। आजकल बाहर में स्प्रिच्युअलिटी क्या है, वो शब्दों में नहीं सुना सकते हैं। शब्दों से कैच नहीं कर सकेंगे पर वायुमण्डल, वायब्रेशन, भावना सूक्ष्म काम करेगी। ज़रा भी रंग, देश, भाषा भेद कोई नहीं है। बाबा कहे ये मेरा समर्पित बच्चा है, जैसे ब्रह्मा बाबा तन मन धन से समर्पित हो गया, ऐसे हरेक को फीलिंग है कि मैं इस तरह से समर्पित हूँ? बाबा कहते, करके वापस नहीं लेना है। परमात्म याद है ही बन्धन से छूटने के लिए। सूक्ष्म में महसूस करके इस बंधन को काटें और बन्धनमुक्त बनें।

सच्चा और तीव्र पुरुषार्थी जो होगा वो कोई न कोई तरीका ढूंढ़ता है बन्धनमुक्त फिर जीवनमुक्त बनने का। वो भी एक औरों के लिए मिसाल बन जाता है क्योंकि वो एक, अनेकों के लिए सरप्राइज़ हो जाता है। जिसके कॉन्टेक्ट में आता है वह भी महसूस करते हैं, यह इसकी लाइफ ऐसे कैसे बनी? जब से बाबा के बने हैं या लगन के अनुसार कोई कोई हैं जो शुरू से नैचुरल सहज बन्धनमुक्त रहे हैं। बन्धनमुक्त सो जीवनमुक्त बनने से औरों की सेवा कर सकते हैं। आजकल ऐसी सेवायें बाबा करा रहा है, इसके लिए हर समय सी फादर, फॉलो फादर...बस, कुछ सोचने की बात ही नहीं है, इस एक-एक शब्द में कमाल है। अगर अभी समय प्रमाण हर देश वाले ऐसी स्थिति बना लेवें तो कल स्वर्ग हमारे हाथों में आ जायेगा।

बाबा आता ही है भारत में स्वर्ग बनाने के लिए, भारत हमारा देश है वो तो भविष्य में, अभी तो परमधाम हमारा देश है। बाबा पवित्रता की शक्ति से सफाई करके शो भानिवाल सुन्दर स्वर्ग के लायक बना रहा है। बच्चों को पहले माँ -बाप स्नान कराते हैं, स्नान कराके श्रृंगार करते हैं। तो ज्ञान स्नान फिर योग से श्रृंगार फिर पढ़ो, स्टडी करो। तो टाइम टेबल अनुसार ज्ञान स्नान, योग का श्रृंगार, कौन पढ़ा रहा है, क्या पढ़ा रहा है, क्या से क्या बना रहा है? जहां तक शरीर में आत्मा है तब तक पढ़ते रहेंगे क्योंकि यह पढ़ाई बहुत अच्छी है। दुनियावी पढ़ाई पढ़के पास होने के बाद वो प्रैक्टिकल प्रैक्टिस करता है, उस घड़ी उठाके पुस्तक नहीं पढ़ता है। तो हम प्रैक्टिकल में पुस्तक नहीं पढ़ते हैं। तो अन्दर ही अन्दर अपने आपको बहलाओ, अच्छी स्थिति बनाने के लिए इतना वखर (माल) मिलता है, उसको यूज़ करो।

बेफिकर बादशाह की स्थिति

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

ओम् शान्ति। सभी के दिल में कौन-सा शब्द आ रहा है? मेरा बाबा, मेरा क्यों कहते? क्योंकि मेरा कभी भूलता नहीं है। जैसे मेरा यह शरीर है, मैं आत्मा हूँ यह मेरा है, मैं नहीं हूँ तो भी मेरा ही याद आता है ना। तो बाबा कहता है अभी यह कहो मेरा बाबा, फिर बाबा भी नहीं भूलेगा। बस, जो भी मुरली से अच्छा लगे, वो याद कर लो, आज बाबा ने यह कहा। भले कितने भी दफ्तर के काम में बिज़ी हो, तो भी यह सोच सकते हो ना! भण्डारे में खाना बना सकते हो तो भी सोच सकते हो। बस, बाबा कहता है याद ही करना है और कुछ थोड़े ही करना है।

तो बाबा ने एक बहुत अच्छा टाइटल दिया है - बेफिकर बादशाह। तो बेफिकर हो या थोड़ा-थोड़ा फिकर आ जाता है? क्या होगा, कैसे होगा, दुनिया की हालत देख करके, पैसे का अभाव देख करके थोड़ा...परिवार कैसे चलेगा? नहीं। परिवार यदि बाबा को दे दिया, मेरा सो तेरा..तो जिम्मेवार बाबा है। इतना निर्मोही होके चलाओ तो बाबा मदद ज़रूर करेगा, क्योंकि बाबा है ना। और देखा गया है फिकर से कुछ नहीं होता है, और ही चिन्ता में, जो होना चाहिए वो भी नहीं होगा। दिमाग काम ही नहीं करता है। तो करते हैं होने के लिए लेकिन होता नहीं है इसलिए बाबा कहता है बस, मेरा बाबा...और कोई का थोड़े ही है, जन्म-जन्म में एक ही बाबा मेरा है और कोई मेरा नहीं।

घर गृहस्थी में कोई न कोई बातें तो हो जाती हैं। लेकिन जिसके लिए फिकर करते हैं वो तो होता ही नहीं है फिर फिकर क्यों करें? वो करें जो प्रैक्टिकल होवे ना। इसमें तो और ही दिमाग यहाँ-वहाँ भागेगा इसलिए बाबा कहते हैं बेफिकर बादशाह। जो भी फिकर आवे बाबा को दे दो। अपने पास नहीं रखो। रात्रि में सोने से पहले अपने आप से पूछो कि सारा दिन में कितना समय खुश रहे? रहना है सदा खुश लेकिन कितना रहे कितना नहीं रहे, वो अपनी चेकिंग सोने से पहले ही करो। सीट पर बैठ करके देखो, अरे मन तूने क्या किया? बुद्धि तुमने ठीक नहीं सोचा। यह कर्मेन्द्रियां, हाथ-पाँव तुमने ऐसा काम क्यों कर दिया? मालिक होके पूछो। बच्चे को कितना जल्दी पकड़ लेते हैं, क्यों किया? क्या किया? बिचारे को चांटा भी मार देंगे, अपने को चांटा मारो ना। बाबा कहता है मीठे बच्चे सावधान, और क्या कहेगा बाबा।

सतयुग में दो ताज मिलते हैं। अभी तीन तख्त मिलते हैं। विचार करो आज बाबा ने मुरली में कितनी प्वाइंट सुनाई? मानो 8 प्वाइंट सुनाई तो आठों ही प्वाइंट मेरी बुद्धि में हैं? जिस समय सुनते हो उस समय तो नोट करते हो ना! आज बाबा ने यह कहा यह कहा...उसे 3-4 बारी दोहराओ तो पक्का याद आ जायेगा। सदा खुश रहने वाले बनो क्योंकि खुशी है सदा हमारे पास बैठने वाली। बाबा कहते हैं खुशहाल, तो सभी खुशहाल हैं ना? थोड़ा बहुत कुछ होता है तो आया गया, आयेगा तो सही।

कलियुग है ना, आयेगा, लेकिन बैठे नहीं। आया और उसको लेन-देन करके दो मिनट सोचके खत्म करो। जैसे दफ्तर में बहुत काम होता है ना, तो कोई जल्दी-जल्दी खत्म कर देते हैं, कोई इकट्ठा करते जाते हैं फिर परेशान होते हैं। तीन तख्त हैं। आत्मा का पहला तख्त यह भ्रकुटी है फिर बाबा के दिल का तख्त है। फिर भविष्य तख्त के अधिकारी तो हैं ही। अपने से बातें करो। इससे क्या होगा? दूसरी बातों में बुद्धि नहीं जाएगी। नहीं तो बहुत जन्मों का अभ्यास पड़ा हुआ है, तो दूसरी दूसरी बातों में चले जायेंगे।

बाबा रोज़ कोई-न-कोई टाइटल देता है, उसी टाइटल को स्मृति में रखो, कितने टाइटल भगवान हमें दे रहा है। दुनिया में कोई से कोई को कुछ एक-आधा टाइटल मिलता है तो कितने फंक्शन आदि करके खुशियाँ मनाते हैं और हमको तो डायरेक्ट भगवान टाइटल्स दे रहा है, हम दिल में जमा कर देते हैं। वाह मेरा बाबा वाह! बस, और है क्या? यह संगम है ही सदा बेफिकर रहने के लिए। अब बेफिकर बनेंगे तभी आधाकल्प बेफिकर राजाई करेंगे। तो खुश! या थोड़ा खुश...थोड़ा-थोड़ा संकल्प है कि यह तो नहीं होगा, यह तो नहीं होगा...ऐसा तो नहीं है ना? अरे, फिकर बाबा को दे दो, बाबा सम्भाल लेगा आपेही, बड़ा बाबा है इसलिए उसको फिकर दे दो।